



उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति आत्म सम्प्रत्य का तुलनात्मक अध्ययन

निर्देशिका

डा० रचना पाठक,
असिस्ट प्रोफेसर,
एन०ए ०एस० पी ०जी कॉलेज, मेरठ

शोधार्थिनी

श्रीमती प्रतिमा,
एन०ए ०एस० पी ०जी कॉलेज, मेरठ

→ प्रस्तावना

→ माध्यमिक शिक्षा → शिक्षा ही मानव जीवन का स्पंदन है, शिक्षा ही गति है, शिक्षा ही जीवन शक्ति है।

एक शिक्षित व्यक्ति समाज में अपना एक विशेष स्थान रखता है। शिक्षा युवकों के लिए एक शानदार संतुलन है, वृद्धों के लिए संतोषदायी है, निर्धनों का धन है, एवं धनवानों का आभूषण है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इनके लिए सेकेंडरी शब्द का उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ है – दूसरे स्तर की। पहली स्तर की प्राथमिक और दूसरी स्तर की यह माध्यमिक शिक्षा है। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है, अपने में पूर्ण इकाई होती है और बच्चों के निर्माण की शिक्षा होती है।

स्वतंत्र देश में शिक्षा के विकास के नए युग की शुरुआत हुई। देश में पंचवर्षीय योजनाएं लागू की गईं व मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की तत्कालीन स्थिति का विश्लेषण करते हुए अनेक उपयोगी सुझाव दिए। देश में माध्यमिक शिक्षा का विस्तार हुआ व इसमें सार्वजनिक शिक्षा की प्रगति के साथ साथ वृद्धि भी हो सकती है। देश में 10+2+3 की नई प्रणाली स्वीकार कर ली गई है।

वर्तमान माध्यमिक शिक्षा के रूप की आधारशिला ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में भारत आए अनेक मिशनरियों ने रखी है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कतिपय राष्ट्रप्रेमी भारतीयों ने माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना का कार्य आरम्भ किया।

डॉ. एस०एन० मुखर्जी के अनुसार – “माध्यमिक स्कूलों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य धनी भारतीयों की अपने अंग्रेज शासकों की भाषा को सीखने की मांग की पूर्ति करना था।” स्वतंत्र देश में शिक्षा के विकास के नए युग की शुरुआत हुई, पंचवर्षीय योजनाएं लागू की गईं व मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की तत्कालीन स्थिति का विश्लेषण करते हुए अनेक उपयोगी सुझाव दिए।

“शिक्षा की चुनौती” नामक दस्तावेज़ में कहा गया है – “जो भी माध्यमिक शिक्षा चालू रखना चाहते हैं वे ऐसा कर सकते हैं, परंतु फिर भी प्राथमिक स्तर पास करने वालों में से मात्र पचास प्रतिशत ही माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश लेते हैं। देश ने नई प्रणाली स्वीकार कर ली गई है।”

सन् 1950-51 में राज्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 987 थी जो बढ़कर (1992-93) में 6637 हो गयी है। अर्थात् निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। इनमें कुल 34 लाख 36 हजार से अधिक छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

→ भारत में वंचित, पिछड़े व कमजोर वर्ग की शिक्षा--

भारत में वंचित, पिछड़े व कमजोर वर्ग में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजातियों के बच्चों की शिक्षा, पिछड़े वर्ग एवं पिछड़े क्षेत्रों के बच्चों की शिक्षा, बालिकाओं की शिक्षा, विकलांग बच्चों की शिक्षा और अल्पसंख्यकों के बच्चों की शिक्षा आती है। सामाजिक न्याय और शैक्षिक अवसरों की समानता की प्राप्ति के लिए इन वर्गों में आने वाले बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था करना आवश्यक है।

शैक्षिक बाधाओं को दूर किया जा रहा है। विशेष रूप से शैक्षिक पिछड़ेपन एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े लोगों की आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है।

→आत्म- सम्प्रत्य-

किसी भी व्यक्ति की स्वयं के बारे में क्या धारणा है यह उसकी उपलब्धि को प्रभावित करता है। किसी भी व्यक्ति का स्वयं के प्रति अपनाया गया दृष्टिकोण ही आत्म सम्प्रत्य है, जिसके द्वारा उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी आयाम परिलक्षित होता है। "सम्प्रत्य मैं और आत्मा का सम्मिश्रण है, जिस से जीवन "मैं और आत्मा" में सामंजस्य स्थापित करता है।"

→ उत्तर प्रदेश में जातियाँ –

उत्तर प्रदेश लोक सेवा – अनुसूचित जातियों, जनजातियाँ, और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण – संशोधन अध्यादेश – तीन धारा – 3 (1) (भाग क) में चमार, धूसीया, झुसिया, जाटव, सम्मिलित हैं, एवम् अनुसूचि (ख) में आगरिया, बधिक, बादी, बहेलिया,

बेरायार, बजनिया, बाजगी, बलहर, बलाई, बाल्मीकि, बंगाली, बंजारे, बरवार, बड़ाई, बसोड, बावरिया, बेलदार, बेड़िया, भतु, भुईया, चेरी, दवगर, धनगर, धनुक, धनकार, धोबी, धींवर, डोम, डोमर, दुसाव, धरमी, धोबी, घसिया, ग्वाल, हबुडा, हरी, हेला, कलाबाज, कंजर, कनाचन, करवल, खराहा, खरवार, खटीक, खैरोट, कोल, कोरी, कोरवा, लाल बेगी, भजवार, मबहजी, मुसहर, नट, पंखा, परहिया, पासी, तरमाली, पाटरी, रावत, पासी, रावत, सहरवा, सनेडीया, रासिया शिल्पकार, तुहरा आदि सम्मिलित हैं।

उद्देश्य--

- 1) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय की तुलना।
- 2) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के छात्रों, अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग की छात्राओं के आत्म-प्रत्यय की तुलना।

→ अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- 1) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- 2) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग के छात्रों, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के आत्म-प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

→ सीमांकन →

- 1) अध्ययन मात्र राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
- 2) अध्ययन मात्र अनुसूचित जाति व अन्य पिछड़ा वर्ग जातियों तक ही सीमित है।
- 3) अध्ययन मात्र माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- 4) अध्ययन मात्र परिषदीय उत्तर प्रदेश के पाँच जिलों तक ही सीमित है।

शोध विधि -

अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि अपनायी गयी है।

→ अध्ययन में प्रयुक्त न्यायदर्श -

प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यायदर्श का चुनाव किया गया है। इसके अन्तर्गत समूह न्यायदर्श विधि को रैंडम रूप में चुना गया है। "न्यायदर्श उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र के पाँच जिलों की जनसंख्या को लेने के कारण ही समूह न्यायदर्श विधि को चुना गया है।"

→ परिकल्पनाओं की व्याख्या –

1) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह सत्य है।

2) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के छात्रों, अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग की छात्राओं के आत्म-सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह सत्य सिद्ध होता है, क्योंकि अनुसूचित जाति की छात्राओं एवं अन्य पिछड़ों की छात्राओं का मध्यमान अधिक पाया गया है।

तालिका- 1

आत्म संप्रत्य की अनुसूचित जाती के छात्र छात्राओ एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र छात्राओ के मान की तुलनात्मक तालिका-

जाति वर्ग	Mean	n	t-value
अनुसूचित जाति	189.76	200	0.44
अन्य पिछड़ा वर्ग	190.30	200	0.44

उपरोक्त तालिका में माध्यमान और कुल न्यदर्श का टी – मान 0.44 प्राप्त हुआ है जो प्रथम परिकल्पना को सत्य सिद्ध करता है।

तालिका-2

आत्म संप्रत्य की अनुसूचित जाती के छात्र एवं छात्राओ के मान की तुलनात्मक तालिका -

अनुसूचित जाति	Mean	n	t-value
छात्र	191.00	100	1.44
छात्राएँ	188.52	100	1.44

उपरोक्त तालिका में माध्यमान और कुल न्यदर्श का टी – मान 1.44 प्राप्त हुआ है जो दरीत्य परिकल्पना को सत्य सिद्ध करता है।

तालिका-3

आत्म संप्रत्य की अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों एवं छात्राओ के मान की तुलनात्मक तालिका -

अन्य पिछड़ा वर्ग	Mean	n	t-value
------------------	------	---	---------

छात्र	189.67	100	0.73
छात्राएँ	190.94	100	0.73

उपरोक्त तालिका में माध्यमान और कुल न्यदर्श का टी – मान 0.73 प्राप्त हुआ है जो दरीत्य परिकल्पना को सत्य सिद्ध करता है।

→ शोध का निष्कर्ष →

अध्ययन के निष्कर्ष

स्वरूप उद्देश्यों की प्राप्ति की गयी है। परिकल्पनाओं की व्याख्या से निष्कर्ष स्वरूप पता चलता है कि अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय में कोई भी सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं

सन्दर्भ ग्रन्थ –

- 1) मुखर्जी एस० एन० : एजुकेशन इन इंडिया, टुडे एण्ड टुमारो, पृष्ठ-111।
- 2) गुन्नार मिर्डल: एशियन ड्रामा, वॉल्यूम III, वर्ष 1938-39।
- 3) एनुअल रिपोर्ट 1993-94, एम० एच० आर० डी०, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, न्यू दिल्ली, पृ० सं० 280।
- 4) सिंह रामपाल एवं शर्मा ओ० पी० : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2004, पृ० सं० 134।
- 5) वर्मा एवं उपाध्याय : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1982। हुआ है, परन्तु अन्य पिछड़ा वर्ग का आत्म-सम्प्रत्यय अधिक पाया गया है।